जनवरी १९९१ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

धम्मवाणी

अभिवादनसीलस्स, निच्चं वद्धापचायिनो।
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति, आयु वण्णो सुखं बलं॥

जो अभिवादन शील है, जो सदा वृद्धों की सेवा करनेवाला है, उसकी चार बातें बढ़ती हैं, – आयु, वर्ण, सुख और बल।

पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के २० वें पुण्य दिवस पर –

ऐसे थे सयाजी ऊ बा खिन !

ऐसे थे परम पूज्य गुरुदेव!

परम सत्यनिष्ठ, परम कर्मनिष्ठ, परम धर्मनिष्ठ।

ऐसा स्पृहणीय निष्कलंक शीलवंत जीवन था उनका। एक आदर्श विपश्यना आचार्य के सर्वथा अनुकूल। ईमानदारी, नेकनीयति और प्रामाणिकता से परिपूर्ण। सरकारी सेवा के लम्बे जीवन काल में उन्होंने अपनी धवल, उज्वल चरित्र-चादर पर रंचमात्र भी दाग नहीं लगने दिया। सदाचार को मैला करके परिस्थितियों के साथ समझौता कर लेना उनके लिए असंभव था।

बड़ी आर्थिक तंगी के दिन गुजर रहे थे। घर में बच्ची बीमार थी। उचित चिकित्सा के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। ऐसी अवस्था में मांडले के रेल्वे स्टेशन पर बम पड़ते हैं; स्टेशन तहस-नहस हो जाती है; रेल्वे की तिजोरी बच जाती है। रेल्वे के स्थानीय चीफ अकाउंटेंट ऊ बा खिन तिजोरी में सुरक्षित सारी रकम निकालते हैं और उसे हारती हुई ब्रिटिश सरकार के उच्च रेल्वे अधिकारी को सौंपते हैं, जो कि बर्मा छोड़कर भाग रहे हैं। जापानी बढ़ते चले आ रहे हैं। बीच का यह अराजकता का समय! ऊ बा खिन से कौन पूछता भला कि रकम कहां गयी? बमबर्षा में तिजोरी बच गयी। उसमें रखी रकम बच गयी। इसका भी किसी को क्या पता।

साधारण व्यक्ति के लिए यह रकम हथिया लेना मामूली बात होती, पर बोधिसत्त्व ऊ बा खिन, उन्हें अपनी शील पारमी पूरी करनी थी। वे ही ऐसा लोभ संवर कर सकते थे। यदि इस सरकारी रकम का गबन कर लेते, जिसे कर लेना बहुत सरल था तो ऊ बा खिन, ऊ बा खिन नहीं होते।

***

बर्मी स्वतंत्रता के बाद, बर्मा के प्रथम अकाउंटेंट जनरल की हैसियत से अपने कार्यालय में विपश्यना शिक्षण शुरू करके सयाजी ने उस विभाग में आशातीत सुधार किया। उनकी ईमानदारी लोगों की चर्चा का विषय बनी। उन दिनों बर्मा का प्रधानमंत्री ऊ नू था, जो कि स्वयं एक धार्मिक और ईमानदार व्यक्ति था। वह चाहता था कि देश का प्रशासन भ्रष्टाचार और कार्य-अक्षमता से मुक्त हो तो देशवासियों का बड़ा कल्याण हो। उस समय शासन के "राज्य कृषि-वाणिज्य निगम" (S.A.M.B) की व्यवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी।

किसानों से धान खरीदकर, चावल-मिलों में उसे पिसवाकर, विदेशों में चावल निर्यात करने का एकाधिकार इस निगम को था। जिस दाम में धान की खरीदी और पिसाई होती थी और जिस दाम में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में चावल बिकता था उसमें दुगुने से अधिक का मुनाफा था। फिर भी यह निगम हर वर्ष घाटे में ही चलता था।

युद्ध पूर्व के बर्मा में धान और चावल का लगभग सारा व्यापार अंग्रेज और भारतीय व्यापारियों के हाथ में था। आजादी मिलते ही सरकार ने इस मुख्य व्यापार का राष्ट्रीयकरण कर लिया। अब यह सारा काम इस निगम को सौंप दिया गया। जिन बर्मी अधिकारियों ने इसे सँभाला, उन्हें व्यापार का जरा भी अनुभव नहीं था। अतः व्यावसायिक निपुणता की कमी तो थी ही, जिसके कारण यातायात और गोदामों में बहुत सा माल नष्ट हो जाता था। परंतु इसके साथ-साथ चावल के मिल-मालिकों तथा विदेशों के व्यापारियों की मिली-भगत से इस विभाग में भ्रष्टाचार भी घर कर गया था। इस कारण भी राज्य को नुकसान होता था। लेन देन और स्टॉक आदि का हिसाब किताब भी समुचित ढंग से नहीं रखा जाता था। अतः खरीद के मुकाबले इतने ऊंचे दामों में माल बिकने पर भी घाटे का क्या कारण है? किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

प्रधानमंत्री ऊ नू ने वास्तविकता जानने के लिए सयाजी की अध्यक्षता में एक जांच-समिति बैठायी। साधारणतया ऐसी जांच-समिति के सदस्य भी बहती गंगा में हाथ धोने से बाज नहीं आते। पर यहां तो ऊ बा खिन की अध्यक्षता में काम हो रहा है। निगम की खामियों और व्याप्त भ्रष्टाचार का सारा कच्चा चिट्ठा इस बोधिसत्त्व ने खोलकर रख दिया। साथ-साथ सुधार के लिए क्रियात्मक सुझाव भी पेश किए, जो कि निगम के बिगड़े हुए ढांचे को आमूल चूल बदलने वाले थे। प्रधानमंत्री ने देखा कि ऐसे सुझावों का क्रियान्वयन कोई ऊ बा खिन जैसा व्यक्ति ही कर सकता है। उसने सयाजी ऊ बा खिन को ही इस कार्य के लिए योग्य व्यक्ति चुना। पार्टी के भ्रष्ट राजनेताओं और अनीति की राह पर चलनेवाले व्यापारियों के हजार विरोध करने पर भी उस ईमानदार प्रधानमंत्री ने ऊ बा खिन को बोर्ड का उपप्रधान बनाने का निर्णय कर लिया। पर सयाजी ने इसे स्वीकार नहीं किया। वे जानते थे कि बोर्ड का चेअरमैन परंपरानुसार वाणिज्य मंत्री होगा जो कि राजनेता है और अधिक आशंका इसी बात की रहेगी कि सुधारने के कड़े निर्णयों के क्रियान्वयन में वही बाधाएं पैदा करेगा। इस धन का मानेवाले पद का राजनेताओं द्वारा, राजनैतिक हथकंडो के लिए दुरुपयोग होता ही रहा है। अतः इतनी बड़ी जिम्मेदारी का बोझ उठाने के लिए काम कर सकने की निर्बाध सुविधा नितांत आवश्यक थी। ईमानदार प्रधानमंत्री ने सारी स्थिति समझी और पूर्व परंपरा को तोड़कर सयाजी को बोर्ड का अध्यक्ष घोषित कर दिया। चावल का व्यापार बर्मा की अर्थ-व्यवस्था का मेरुदंड था, जिसका एकाधिकार इस बिगड़े हुए बोर्ड के आधीन था। इसे सुधारे बिना देश की आर्थिक स्थिति सुधरनी असंभव थी। इसे ऊ बा खिन जैसा पाक साफ दामन

वाला निर्दोष, निर्भय और निष्पक्ष व्यक्ति ही सुधार सकता था।

इस सरकारी घोषणा ने बोर्ड के अधिकारियों में खलबली पैदा कर दी। जिस व्यक्ति ने बोर्ड के बिगड़े हुए ढांचे की सारी पोल खोली थी और उनकी अपनी बदनीयति और बदइंतजामी का पर्दाफांस किया था, वही उनके बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया गया है। यह उनके लिए असह्य था। अतः सभी अधिकारियों ने मिलकर निर्णय किया कि ऐसा होगा तो वे हड़ताल कर देंगे। पर प्रधानमंत्री उनकी इस धमकी से नहीं घबराया। वह अपने निर्णय पर दृढ़ रहा। ऊ बा खिन भी इस विषम स्थिति का सामना करने के लिए तैयार थे। अतः उन्हें अध्यक्ष बनाया गया। अधिकारियों ने अपनी धमकी के अनुसार हड़ताल घोषित कर दी।

बर्मा का सबसे बड़ा व्यावसायिक निगम जिसमें सालाना अरबों रुपयों का धंधा होता हो और हजारों लोग काम करते हों, उसके सारे अधिकारी हड़ताल किए बैठे हों तो सारा काम ठप्प हो जाएगा। पर धर्मवान की धर्म सहायता करता है। ऊ बा खिन नहीं झुके। सारे क्लर्क और मजदूर काम पर आते रहे। केवल अफसरों की हड़ताल थी। हड़ताल चलती रही और बोर्ड का काम भी नियमित चलता रहा। अपने लेखा-जोखा विभाग के कुछ एक विश्वासी अधिकारियों का सहयोग लिया और बोर्ड का सारा काम सामान्य क्लर्कों से कराने लगे। हड़ताली अधिकारी हैरान थे। उन्होंने समझा था इतनी विशालकाय निगम का काम बिना अधिकारियों के चल ही नहीं सकता। ऊ बा खिन अवश्य घुटने टेक देंगे और शर्तें कितनी ही गैरवाजिब क्यों न हों, स्वीकार कर ली जाएँगी। पर ऊ बा खिन की समता, मैत्री और सत्यपरायणता के बल पर सारा काम निर्बाध चलता रहा। अंततः अधिकारीवर्ग को ही घुटने टेकने पड़े। कुछ एक सप्ताहों के बाद बिना शर्त हड़ताल तोड़ दी गई। अफसर लोग काम पर आ गए।

हड़तालियों के प्रति इस संत पुरुष के मन में जरा भी कटुता नहीं थी। उनका मन करुणा से भरा हुआ था। कठोरता तो अपने कर्तव्य-परायणता के लिए थी। शासन से भ्रष्टाचार उन्मूलन करने के लिए थी। कठोर कदम उठाने आवश्यक थे। गलत रास्ते पड़े लोगों को सुधारना आवश्यक था। परंतु उनके प्रति प्यार ही प्यार था मन में। दंड देने मात्र से संसार में कोई नहीं सुधरता। सुधार प्रेमभाव से ही संभव है। गुरुदेव ने उन भटके हुए अफसरों के प्रति असीम मैत्रीभाव का परिचय दिया। सारे कार्यालय में सद्भावना और सौमनस्यता छा गई। उनमें से अनेकों को विपश्यना के शिविरों में बैठाया गया। जिस-जिस दिशा में जो-जो सुधार चाहते थे, वे संभव होने लगे। उन्होंने इस बोर्ड को सँभालने के लिए दो वर्ष का समय मांगा था। दो वर्षों में अनेक सुधार हुए। भ्रष्टाचार उन्मूलन में; कार्यकुशलता में; लापरवाही के कारण नष्ट होनेवाले अनाज को बचाने में; लेखा-जोखा व्यवस्थित और सुनियमित ढंग से रखने में। इन दो वर्षों में चावल के निर्यात की आमदनी बढ़ाने और उपज नष्ट होने से होनेवाली हानि को कम करने के जो कीर्तिमान स्थापित किए, वह लोगों की प्रशंसाजनक चर्चा के विषय बने।

सचमुच धर्मवान की धर्म सहायता करता है। प्रकृति उसका साथ देती है। बहुत सा चावल वर्षा के दिनों में ही निर्यात होता था। माल लादने के आधुनिक उपकरण तो थे नहीं। मानवी मजदूर ही पीठ पर बोरे लादकर विदेशी जहाजों पर माल चढ़ाते थे। बहुत वर्षा होती तो काम रुक जाता। विदेशी जहाजों को रंगून पोर्ट पर कई दिनों तक रुकना पड़ता तो इसका बहुत बड़ा हरजाना देना पड़ता और गिरती वर्षा में माल चढ़ाते तो चावल भीग जाते, जिनका खरीददार को हरजाना देना पड़ता। परंतु अब तो सारी व्यवस्था के शीर्ष पर यह धर्मपुरुष था। सयाजी जिस दिन देखते कि बादल खूब घिरे हैं और विदेशी जहाज जेटी पर लगे हैं, तो धर्म-संकल्प करते, अधिष्ठान करते कि आज दिन भर वर्षा न बरसे और लोग आश्चर्यचकित होकर देखते कि दिनभर बादल घिरे रहते, पर एक बूंद भी पानी नहीं बरसता। माल लदता रहता। शाम होने पर जैसे ही लदान का काम बंद होता, मूसलाधार वर्षा शुरू हो जाती और रातभर खूब वर्षा होती। आखिर वर्षा तो होनी ही चाहिए। उसके बिना देश की शस्य संपत्ति कैसे बढ़ेगी? गुरुजी की मंगलमय धर्मवाणी गूंजती –

देवो वस्सतु कालेन सस्स सम्पति हेतु च।
फीतो भवतु लोको च राजा भवतु धम्मिको॥

धनधान्य की संपत्ति के लिए वर्षा खूब बरसे; शासक धार्मिक हो और प्रजा खुशहाल हो!

गुरुदेव की यह मंगल कामना खूब फलीभूत होती। वर्षा खूब बरसती, पर माल की लदाई के समय रुक जाती। सारी प्रकृति साथ देती। आखिर शासन का शीर्षस्थ अधिकारी ऐसा धर्मनिष्ठ व्यक्ति जो था।

आदमी सफल होता ही है। स्वयं धर्म में संपुष्ट हो, निरालस हो, कर्मठ हो, व्यवहार-कौशल्य में दक्ष हो और निःस्वार्थ जन सेवाभावी हो तो धर्म की सारी शक्तियां मदद करती ही हैं। यही है धर्म की महानता!

धर्म पुत्र,
स. ना. गो.

अनुलोम धारा की रिश्वत भी नहीं।

कलकत्ते का एक बड़ा व्यापारी S.A.M.B को हर वर्ष हैसियन के बोरे [gunny bags] बड़ी मात्रा में सप्लाई करता था। गुरुजी की अध्यक्षता के समय भी उसने एक बड़े टेंडर में भाग लिया। उसके दाम सबसे कम थे। नियमानुसार उसे टेंडर मिलना ही चाहिए था। परंतु S.A.M.B से व्यापार करते हुए उसे कई वर्ष बीत चुके थे। वह वहां की रीति-नीति खूब जानता था। नीचे से नीचे दाम का ऑफर होने पर भी ऊंचे अफसरों की समुचित भेंटपूजा न की जाय, तो कोई न कोई दोष निकालकर ऑफर रिजेक्ट कर दिया जाता था। ऑर्डर किसी अन्य को दे दिया जाता था। इसका इसे खूब अनुभव था।

अब ऊ बा खिन सर्वोच्च अधिकारी थे। उसने सुना कि ये तो घूस लेते नहीं। वह मन ही मन मुस्कराया। सभी नये-नये अफसर ऊपर-ऊपर से ऐसी धाक जमाने की कोशिश करते ही हैं। रुपया भला किसे खारा लगता है? एक करोड़ से ऊपर का सौदा था। एक पर्सेन्ट से भी अच्छी खासी रकम हो जाती है। घर आयी लक्ष्मी को कौन नकारेगा भला? वह शाम को गुरुजी के घर पर जा पहुँचा।

गुरुजी किसी मीटिंग में व्यस्त थे। देर से घर पहुँचे। आते ही इस व्यक्ति को अपने छोटे से बैठक खाने में बैठे देखा तो बहुत झुँझलाए।

"तुम्हें मालूम नहीं, हमारा नियम है – कोई व्यापारी किसी अफसर के घर पर उसे न मिले! जो काम हो उसके लिए ऑफिस में ही मिले?"

"सयाजी नाराज न हों! मैं तो कलकत्ते का रहनेवाला हूं। आप के नए नियमों को मैं कैसे जानूं?"

"तो जाओ, कल सुबह ऑफिस में मिलना!"

"पर सयाजी, मैं ये तुच्छ सा उपहार लेकर आया हूं, इसे स्वीकार करें! बाकी बातें कल ऑफिस में हो जाएंगी।"

ऐसा कहते हुए उसने नोटों की गड्डियांभरी अटैची खोली और गुरुजी की त्योरी चढ़ गई। व्यापारी घबराया, पर वह बड़ा चालाक था। झट पैतरा बदलते हुए बोला –

"सयाजी! यह उपहार आप के लिए थोड़े ही है। यह तो आप के साधना केन्द्र के लिए है। आप वहां इतना अच्छा लोकसेवा का काम कर रहे हैं।"

"निकल जाओ यहां से!"

गुरुजी की वाणी में कठोरता थी।

"तुम्हें मालूम नहीं, ध्यान केन्द्र में केवल साधक ही दान दे सकते हैं। वह भी घर पर नहीं, आश्रम में ही।"

व्यापारी सकपकाया।जल्दी से अटैची बंद की।गुरुजी ने अब करुणवाणी से कहा,"मैं जानता हूं, तुम पुरानी परंपरा से प्रभावित होकर ऐसा करने का साहस कर सके। खैर मनाओ कि मैं तुम्हारे खिलाफ पुलिस नहीं बुला रहा हूं। चले जाओ! अब भविष्य में ऐसा दुष्कर्म करने का दु:साहस कभी न करना।जानते हो हमारे देश में घूस लेने और देनेवाले दोनों को अपराधी माना जाता है और उन्हें बहुत कड़ी सजा मिलती है।"

बेचारे व्यापारी के होश-हवास गुम हो गए। शरीर पसीने से तराबोर हो गया। अटैची हाथ में लेकर घबराया हुया जल्दी-जल्दी घर के बाहर आया और होटल पहुँचकर ही चैन की सांस ली।

दूसरे दिन S.A.M.B. के ऑफिस में पहुँचा तो उसे gunny bags की सप्लाई का ऑर्डर थमा दिया गया। उसने देखा, इस ऑर्डर पर एक दिन पहले की ही तारीख थी। तो सयाजी को पता था कि ऑर्डर तो मेरे नाम दिया जा चुका है, फिर भी उन्होंने भेंट स्वीकार नहीं की। वह मुँह बाए देखता रह गया।

दूसरे दिन किसी काम से मुझे मिला। सारी रामकहानी कह सुनायी और बोला तुम्हारे गुरुजी तो बड़े अजीब हैं। उन्होंने अनुलोम धारा की भेंट भी स्वीकार नहीं की।

रिश्वतखोर अफसरों की और व्यापारियों की भाषा में अनुलोम धारा की रिश्वत वह, जिसे लेने में सरकार की कोई हानि न हो और देनेवाला भी बिना दबाव के दे। प्रतिलोम वह जिसमें रिश्वत लेनेवाले को झूठ-सच की चालबाजी द्वारा राज्य-सरकार की आय को नुकसान पहुंचाकर रिश्वत लेनी पड़े।

अरे भाई! अनुलोम हो या प्रतिलोम, रिश्वत तो रिश्वत ही है। सयाजी ऊ बा खिन जैसे संत पुरुष जिन्होंने यह बीड़ा उठाया है कि इस विभाग से भ्रष्टाचार का उन्मूलन करेंगे,वह स्वयं ऐसे दुष्कर्म में कैसे शामिल होते भला!

धन्य है वह धर्मनिष्ठ व्यक्ति! जिसने प्रलोभन को त्यागकर प्रतिलोम क्या, अनुलोम रिश्वत लेना भी स्वीकार नहीं किया।

धर्म पुत्र,

स. ना. गो.